P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति की विवेचना

हरिचरण अहिरवार
अतिथि विद्वान,
राजनीति विज्ञान विभाग,
शा. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रीवा

लवकुश दीपेन्द्र
अतिथि विद्वान,
राजनीति विज्ञान विभाग,
शा. महा. जयसिंहनगर,
शहडोल

सारांश

नारी का सम्मान करना एवं उसके हितों की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति है। यह एक विडम्बना ही है कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त विरोधाभासी रही है। एक तरफ तो उसे शक्ति के रूप में अत्यन्त प्रतिष्ठित किया गया है तो दूसरी ओर उसे 'बेचारी अबला' भी कहा जाता है। इन दोनों ही अतिवादी धारणाओं ने नारी के स्वतन्त्र विकास में बाधा पहुंचाई है।

प्राचीनकाल से ही नारी को इन्सान के रूप में देखने के प्रयास सम्भवतः कम ही हुये है। पुरूष के बराबर स्थान एवं अधिकारों की मांग ने भी उसे अत्यधिक छला है। अतः वह आज तक 'मानवी' का स्थान प्राप्त करने से भी वंचित रही है।

मुख्य शब्द : महिला सशक्तीकरण, महिला समस्या, स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री–पुरूष, समानता, महिला आरक्षण ।

प्रस्तावना

हमारी संस्कृति में महिलाओं की सबसे बड़ी भूमिका मां, पत्नी, बहन और बेटी के रूप में है। वह माँ बनते समय अपने प्राणों को संकट में डालकर शिशु को जन्म देती है। जन्म देने के पश्चात उसका लालन पालन उसकी परवरिश, उसको पढ़ाना, पढाई के लिये उसे प्रेरित करने एवं तैयार करने के साथ ही उसे झूठ और सच का पाठ पढ़ाना, उसे सही और गलत रास्ता बताना, उसको कैसा व्यवहार करना है सिखाना आदि गुणों का संचार नारी बच्चे के भीतर करती है। जन्म लेने वाला बच्चा यदि किसी से सर्वाधिक प्रेम, स्नेह और प्यार पाता है तो वह माँ है। नारी पत्नी के रूप में पति का हर दुख एवं उसके हर सुख दुख के मोड़ पर उसका साथ एवं सहयोग करती आई है। वह बहन के रूप में आनन्द का बिखराव अर्थात आमोद–प्रमोद वितरित करती है, और बेटी के रूप में अपनी बाल–सुलभ चंचलताओं से सबके मन को मोहित करने वाली है।

इस प्रकार मानव जगत निर्माण में महिला की अनिवार्यता अत्यधिक उल्लेखनीय है। जिसके बिना मानव जगत निर्माण संभव नहीं था अर्थात महिला पुरूष का योग ही मानव जगत है यदि समाज को एक सिक्के की संज्ञा दी जाय तो महिला उस सिक्के की एक अनिवार्य पहलू है। महिला के बिना इस संसार सागर की कल्पना असंभव थी। थोड़े समय के लिए यदि महिला को संसार से गायब कर दें तो यह संसार एक भी कदम आगे नहीं चल सकता था। आज जो संस्कृतियाँ दिख रही है, जो समाज और परिवार दिख रहे है, यह नहीं दिखाई देते।

इस प्रकार से, महिला जैसे तार के बिना वीणा और धुरी के बिना पहिया बेकार होता है, उसी तरह नारी के बिना मानव का सामाजिक जीवन। नारी के बिना दुनिया की हर रचना अपूर्ण है, हर कला रंगतहीन है। इसके अभाव में मानवता के विकास की कल्पना असंभव थी।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू के अनुसार – किसी भी देश की स्थिति को जानना हो तो उस देश की नारी की स्थिति का अध्ययन कर लिया जाना चाहिए।

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति

सृष्टि निर्माण के समय नर और नारी दोनो को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया अर्थात दोनों ही समान है, जिसमें कोई न छोटा है और न बड़ा। इसी सार तत्व को अपनाते हुए भारतीय वैदिक संस्कृति में महिलाओं को पुरूषों के समान समझने का कार्य हुआ जहाँ पर इन्हें पुरूषों के बराबर शिक्षा, अपना वर चुनने की इच्छा अर्थात स्वतंत्रता, विधवा विवाह की व्यवस्था, एक पत्नी प्रथा की

व्यवस्था जहां पर कि पर्दा एवं सती प्रथा नही थी और इसके साथ ही धार्मिक अनुष्ठानों में भी नारी की उपस्थिति अनिवार्य थी।

यहाँ पर नारियों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा, गुण एवं ज्ञान से ही समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया और समाज का मार्गदर्शन एवं उसको सही दिशा प्रदान करने का कार्य किया।

इस प्रकार कुछ हद तक यहां महिलाओं को पुरूषों के समान समझने का कार्य हुआ किन्तु पूरी तरह से नारी को बराबरी का दर्जा नही मिल सका क्योंकि सत्ता पुरूषों के हाथ में ही रही और सत्ता पितृ सत्तात्मक थी साथ ही महिलाओं को युद्ध क्षेत्र में भी जाने से मनाही थी।

उल्लेखनीय है कि यहां पर नारी को अत्यधिक सम्मान देने का तो कार्य हुआा, सम्मान किया तो गया पर जो सबसे बड़ा सम्मान था उसे नही दिया गया। नारी का सबसे बड़ा सम्मान शासक होने या बनने का अधिकार था। जिस जगह या देश में जो सत्ता पर काबिज होता है, वहा वहाँ का व्यवस्थापक या व्यवस्था बनाने वाला होता है। नारी को सत्ता पर काबिज होने वाला, शासक एवं व्यवस्थापक के पद से वंचित रखा गया और उन्हें युद्ध क्षेत्र में भी जाने से मना किया गया, जहां पर उनका वास्तविक कार्य क्षेत्र घर रहा।

इस प्रकार से उपर्युक्त बिन्दुओं को लेकर कई प्रकार के प्रश्न एवं शंकायें उत्पन्न होती है कि हर क्षेत्र में नारी को जाने का अधिकार क्यों नहीं? हर क्षेत्र में प्रवेश करने का अधिकार क्यों नही ?

जब प्रकृति ने महिला पुरूष दोनों को समान माना है तो प्रकृति के अनुसार महिलायें भी हर कार्य को कर सकती है। तब महिला और पुरूष के कार्य में भेद क्यों ?

मनुस्मृति के अनुसार, ''स्त्री स्वतंत्रता उचित नही है उसकों बचपन में पिता के अधीन, विवाह के बाद पति के अधीन और विधवा होने पर पुत्र के अधीन बताया गया है।'' यही से अर्थात उत्तर वैदिक काल एवं मध्यकाल से स्त्री की सामान्य स्थिति में कुछ गिरावट आयी जो निरंतर बढ़ती गयी अर्थात यहाँ से महिला अनादर शुरू हुआ।

भारतीय समाज में महिलाओं का अनादर एवं उनसे जुड़ी समस्या का जन्म वर्तमान समाज की देन नही है, परन्तु यह तो पूर्व के समाज की देन है। जिनका कि हमारे इतिहास में स्पष्ट वर्णन है। जहां पर महिलाओं को सत्ता से दूर रखा गया। जहां पर वह घर की चहरदीवारी में कैद होती गयी।

कवि तुलसीदास जी ने भी नारी को गंवार, शुद्र, पशु के समान ताड़ना का अधिकारी कहां। जहाँ का इतिहास बताता हो कि महिला के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए, जहाँ नारी की स्वतंत्रता उचित नही बताया गया उसे पति के अधीन होना चाहिए, उसके साथ पशु, गंवार और शूद्र के समान व्यवहार करना, ताड़ना करना बताया गया है। जब प्रकृति ने नर–नारी दोनों को समान माना है तो कोई किसी का अधीन क्यों ? यदि अधीन शब्द को मान्यता दी जाए तो फिर दोनों के लिए समान व्यवहार एवं समान व्यवस्था होनी चाहिए अर्थात पुरूष नारी के अधीन और नारी पुरूष के अधीन हो तभी इसे न्यायसंगत कहा जा सकेगा।

इस प्रकार नारी के मान सम्मान में कमी आती गयी यहाँ से पुत्र जन्म का महत्व बढ़ गया, धार्मिक क्रियाकलापों में उसका महत्वपूर्ण से कम हो गया जो आज एक अत्यंत चिन्तनीय विषय के रूप में एवं एक बड़ी समस्या के रूप में उभर कर आयी है। इस प्रकार भारतीय समाज ने नारियों के संबंध में अपनी प्राचीन एवं मध्यकालीन धारणा को प्रकट करके कहीं न कहीं भारतीय नारी के साथ षडयंत्र किया। नारी को घर की शोभा, शर्म एवं लज्जा की देवी, विनम्रता और मर्यादा की देवी कहा। भारतीय नारी के इन तीन गुणों की काफी सराहना होती रही है जिसमें प्रथमतः लज्जा है। इस गुण की पुरूष ने चर्चा करके नारी को चुप रहने, शांत रहने का, कुछ न बोलने का आदेश दिया जिसकी वजह से वह नारी को गुलाम बनाकर रख सके, वह घर से बाहर न निकल सके, अर्थात पढ़ाई न कर सके, जिससे कि वह उसका सहयोग अपने अनुसार कर सके। और उसके दूसरे गुण मर्यादा की चर्चा करके उसे घर परिवार की सेवा करना ही उसका धर्म एवं कर्म है, उसे पर्दे में रहना बताया, उसका कार्यक्षेत्र घर है अर्थात् उसके सीमित कार्य को बताया गया। उसे नम्रता की देवी कहा गया अर्थात वह हमेशा विनम्र भाव का आचरण करेगी पति और घर परिवार के अन्य सदस्य कैसा भी व्यवहार करें नारी को विनम्र ही रहना है।

प्रकृति के अनुसार महिला–पुरूष दोनो बराबर है तो नारी भी हर कार्य को कर सकती है उसे भी सत्ता यानि व्यवस्था बनाने वाले पद पर बैठने का पूरा–पूरा हक होना चाहिए जो प्राचीन समाज में नहीं था। नारी और पुरूष के कार्य में भेद होने के कारण ही वह सत्ता से दूर इसी कारण से उसकी वर्तमान में यह दशा हुई है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय समाज में महिलाओं को सशक्त बनाना होगा ताकि वह देश में निडरता के साथ चल पाएं और उन्हे कभी भी एहसास न होने दिया जाए कि वह पुरूषों से कम हैं।

पौराणिककाल में भी महिलाओं के साथ अन्याय जैसे सती प्रथा, दहेज प्रथा, नगरवधु प्रणाली, यौन उत्पीड़न, पर्दा प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, लड़कियों से कम उम्र में काम करवाना, बाल विवाह होते थे। हालांकि आज इनमें से ज्यादातर चीजे कम हो चुकी हैं परन्तु आज भी कुछ ऐसी बाधाऐं हैं, जिनके कारण महिलाऐं सशक्त नही हो पा रही हैं जिन्हे दूर करना होगा। भारत में महिलाओं को काम करने का अधिकार, शिक्षा की भूमिका, स्वयं का फैसला करने का अधिकार नही मिल पा रहा है जो हमें उन्हे ये अधिकार दिलाने होगें।

वर्तमान समय में भारतीय सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन तो किया जा रहा है लेकिन इन योजनाओं का क्रियान्वयन निचले स्तर तक उचित ढंग से न पहुंच पाने के कारण महिलाओं को इसका अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है। भारतीय महिलाऐं संसार की अन्य किन्हीं भी महिलाओं की भांति अपनी समस्याओं को सुलझाने की

क्षमता रखती हैं। आवश्यकता है उन्हें उपयुक्त अवसर उपलब्ध कराने की। इसी आधार पर भारत के उज्जवल भविष्य की संभावनाऐं सन्निहित है।

महिलाओं की सामाजिक समस्याएँ

जहाँ आज कन्या भ्रूण हत्या सर्वाधिक हो रहे है, उनको कम पढ़ाना और घर से जल्दी विदा करना अर्थात कम उम्र में विवाह, पुत्र प्राप्ति पर जन्मोत्सव, नारी होने के कारण पोषण आहार में असमानता, आर्थिक रूप से वह दूसरों पर आश्रित है अर्थात महिला बरोजगारी, धार्मिक अन्धविश्वास के कारण महिला अनादर, इन्हें भोग विलास के साधन मानकर कई औरतों को गुलाम बनाया गया। तलाक का कष्ट, विधवा महिलायें और उनका अपमान इस प्रकार से महिला आज दहेज की प्रमुख साधन और घर की सेवक बनकर रह गयी है। भारत में दलित एवं पिछड़ी जाति की महिलाओं की स्थिति और भी ज्यादा खराब है।

भारत अपनी प्रचीन संस्कृति एवं सभ्यता पर गर्व करता है। उस संस्कृति पर जिसने महिलाओं को धोखे में रखा, उन्हें सत्ता से वंचित रखा और दलित महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जिसकी वजह से भारत की आधी से ज्यादा आबादी अनपढ़ अशिक्षित एवं बेरोजगार हुई। जहां ज्यादातर महिला मजदूर और ज्यादातर महिला अशिक्षा, जिसकी वजह से भारत आज विश्व के कई राष्ट्रों से विकास में पीछे है। भारत का यह पिछड़ापन और महिलाओं की इस दयनीय दशा के लिये जिम्मेवार भारतीय समाज में शिखर पर बैठा हुआ वह व्यक्ति है जिसने महिला और पुरूष की असमानता को जन्म दिया। जिसके पास ज्ञान का भण्डार तो था पर उसका प्रसार नही किया, उसे अपने चाहने वालों तक और पुरूषों तक ही सीमित रखा, जिसने ऊंच–नीच की भावना को मान्यता दी, जिसने जातिवाद को बढ़ाया जो भारत देश और भारतीय समाज के लिये अच्छा नहीं था। यही वह व्यक्ति है जिसने स्वार्थवश सबका दुरूपयोग किया। जिससे भारत गुलाम हुआ भारत की महिला पिछड़ी और भारत भी पिछड़ गया।

जहाँ के हिन्दु शास्त्रों में पुरूष को मानव का दर्जा नहीं मिला, उसे मानव नही समझा गया वहाँ की महिलाओं की क्या दशा होगी यह समझा जा सकता है। भारतीय समाज में महिलाओं को पीछे रखकर समाज ने खुद अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने का कार्य किया है। भारतीयों एवं भारतीय पुरूष को महिलाओं के सेवाभाव, त्याग, उसके समर्पण एवं बलिदान को नहीं भूलना चाहिए क्योंकि वह महिला की इन्हीं विशेषताओं के कारण उसका सदैव के लिये ऋणी है।

किसी समाज की युक्ति नारी शिक्षा के बिना असंभव है। हमारे समाज में नारी को शिक्षित होना नितांत आवश्यक है यदि वह निरक्षर होगी तो वह अपना योगदान नहीं दे पायेगी यदि सुशिक्षित होगी तो वह परिवार सुफल और बच्चों का पालन पोषण भी सही ढंग से होगा। नारी की उन्नति एवं अवनति में समाज की उन्नति एवं अवनति जुड़ी है। वह समाज किसी भी दशा में उन्नति के पथ पर अग्रसर नही सकता जहां नारियों का उचित सम्मान नही होता।

पुरूष को अपने ऋणभार को कम करने लिये ऋण के बोझ को हल्का करने के लिये महिलाओं की समस्या का समाधान खोजना होगा।

महिलाओं की सामाजिक समस्याओं का समाधान

महिला शिक्षा पर जोर

महिला को शिक्षित करके उसकी स्थिति को बदला जा सकता है उसके अंदर वर्षो से बैठे डर एवं लज्जा को भगाना होगा।

वैवाहिक सुरक्षा

महिला को निडर बनाने के लिये भारतीय सरकार को महिला के वैधानिक सुरक्षा के लिये ईमानदारी से ऐसे कानून को लागू करना ताकि वह बिना किसी भय के किसी भी समय कहीं भी आ जा सके अर्थात यात्रा कर सके।

रोजगार के साधन

नारी को आत्मनिर्भर होना आवश्यक है आर्थिक विकास एवं अर्थव्यवस्था में महिलाओं को संगठित करना। महिला रोजगार प्राप्त कर अपने पैर पर खड़ी हो और देश की जी.डी.पी. में योगदान दे इसके लिये उसे प्रोत्साहित करना।

महिला संगठन एवं आंदोलन

महिला अपनी शक्ति को पहचाने वह आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हो। इसके लिये उसे संगठित होना और उसके आंदोलन को पुरूषों के द्वारा गति देने की जरूरत है।

महिला सशक्तीकरण

महिला को सशक्त बनाने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम चलाना, महिला पुरूष दासता से मुक्त हो अच्छी बात है और इसके लिये पुरूष को अपना पूरा योगदान देना होगा।

शोषण के विरूद्ध आगे आना

महिलाओं को शोषण के विरूद्ध खड़े होने की आवश्यकता है। जिसमें पुरूषों को बढ़ चढ़ कर सहयोग करना होगा।

महिला के साथ निष्पक्षता एवं न्याय

महिला के साथ निष्पक्षता एवं न्याय के लिये अनिवार्य व्यवस्था। जिससे वह अपना विकास स्वतंत्रतापूर्वक कर सके।

पुरूष को नारी के प्रति अपने आचरण में परिवर्तन लाना

पुरूष को नारी के प्रति अपने व्यवहार में परिवर्तन लाने एवं दृष्टिकोण में बदलाव लाने की जरूरत है। पुरूष में नारी के प्रति जो चिढ़न, जलन एवं अकड़न है उसको त्यागने की जरूरत है।

भारतीयों के ऊपर महिलाओं की सेवा भावना और उसके त्याग का कर्ज है। जिसे समस्त भारतीयों, राजनेताओं और प्रशासकों को मजबूत दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ महिलओं को आगे लाने का कार्य करना पड़ेगा।

निष्कर्ष

प्रचानी काल के भारत में महिलाओं का बहुत सम्मान किया जाता था। परन्तु जैसे जैसे समय बीतता गया महिलाओं की स्थिति में भीषण बदलाव आया। महिलाओं के प्रति लोगों की सोच बदलने लगी थी। बहुविवाह प्रथा, सती प्रथा, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या

आदि जैसे मामले उजागर होना एक आम बात बनने लगी थी। बिगड़ते हालातों को देखते हुए महान नेताओं तथा समाज सुधारकों ने इस दिशा में काम करने की ठानी। उनकी मेहनत का ही नतीजा था कि महिलाओं की बिगड़ती स्थिति पर काबू पाया जा सका। उसके बाद भारतीय सरकार ने भी इस दिशा में काम किया। सरकार ने पंचायती राज प्रणाली में 33 प्रतिशत सीट महिलाओं के लिए आरक्षित कर दी ताकि वे आगे आकर समाज की भलाई के लिये कार्य कर सके।

नारी विभिन्न परिस्थितियों से गुजरती हुई आज अपने आप को समाज में व्यवस्थित एवं स्थापित करते हुए आगे बढ़ रही है। विभिन्न प्रतियोगियों के साथ संघर्ष करते हुए वह अपनी प्रतिभा और क्षमता का परिचय करा रही है। कई संस्कृतियों में योगदान देने वाली नारी आज अपनी खुद की पहचान बनाने में सफल हुई है। नारी के त्याग, मेहनत, प्रतिभा, उसकी ऊर्जा और ईमानदारी से आज संसार और राष्ट्र लाभान्वित हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ. राधेशरण, भारत की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना और संस्कृति के मूल तत्व, (आदिकाल से 1950 ई. तक)*
2. *नाटाणी, प्रकाश नारायण, भारतीय संस्कृति के विविध आयाम*
3. *आहुजा, राम, 1999, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत प्रकाशन जयपुर, नई दिल्ली।*
4. *अल्टेकर, ए.एस. '1956' द पोजीशन ऑफ वोमेन इन हिन्दु सिविलाइजेशन, मोतीलाल बनारसी लाल, वाराणसी*
5. *जोशी, पुष्पा '1988; गांधी आन वोमन, सेन्टर फार वोमनंस डेवलपमेंट स्टडीज, दिल्ली*
6. *मिश्र, जयशंकर '2006; प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना*